असम के राज्यपाल तथा गौहाटी विश्वविद्यालय के कुलाधिपति का अभिभाषण

दिनांक 29 मई 2023, गुरुवार	**समय : 11:00 AM**	**स्थान : गौहाटी विश्वविद्याल, गुवाहाटी**

गौहाटी विश्वविद्यालय के सम्मानीत कुलपति प्रोफेसर प्रताप ज्योति हैंडिक जी,

शैक्षणिक और प्रशासनिक विभागों तथा केंद्रों के सभी प्रमुखों,

अन्य सभी संकाय के सदस्यों, अधिकारियों एवं कर्मचारियों,

उपस्थित विद्यार्थियों और सम्मानित अतिथिगण,

पूर्वोत्तर भारत में उच्च शिक्षा के प्रमुख संस्थानों में से एक गौहाटी विश्वविद्यालय में आज आपके बीच आने का अवसर पाकर मैं अत्यंत हर्षित हूँ। यह गौहाटी विश्वविद्यालय में मेरा पहला दौरा है। पर यह विश्वविद्यालय मेरे हृदय में बसता है।

पूर्वोत्तर में सबसे पुराना, बड़ा और अग्रणी विश्वविद्यालय होने के नाते गौहाटी विश्वविद्यालय इस क्षेत्र की शैक्षणिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि का प्रतिनिधित्व करता है। साथ ही यह विश्वविद्यालय इस क्षेत्र में सभी शैक्षणिक संस्थानों को अपना समर्थन देता आया है।

26 जनवरी, 1948 को गौहाटी विश्वविद्यालय की स्थापना के साथ ही पूर्वोत्तर के तमाम लोगों की उच्च शिक्षा के एक संस्थान का वह सपना साकार हुआ, जो दशकों से देखा जा रहा था।

सत्यनाथ बोरा, दैव चंद्र तालुकदार, कुतुबुद्दीन अहमद, विरंची कुमार बरुवा, जे. आर. फुकन, रोहिणी कुमार बरुवा, माधव चंद्र बेजबरुवा, मइदुल इस्लाम बोरा, गोपीनाथ बरदलै जैसे महानुभावों के अथक प्रयास से यह शुभ कार्य सम्पन्न हुआ था।

इस क्षेत्र और क्षेत्र के लोगों के लिए एक परिवर्तनकारी भूमिका निभाना, शोध को बढ़ावा देना, अपने मजबूत आधार से वैश्विक मानवीय, सामाजिक और वैज्ञानिक चिंतन को स्पष्ट करना, चिंतन और व्यवहार में नैतिक मानकों को स्थापित करना, पर्यावरण, सामाजिक और सांस्कृतिक विकास की संस्थागत गतिविधियों को बढ़ावा देना, क्षमता विकास, कौशल और उद्यमिता में वृद्धि करना इस विश्वविद्यालय का मुख्य उद्देश्य रहा है।

विश्वविद्यालय और इससे संबद्ध महाविद्यालयों के हितधारकों को सशक्त और सक्षम बनाना, मौजूदा शैक्षणिक और प्रशासनिक संसाधनों की संरचना में सुधार करना, भौतिक और तकनीकी बुनियादी ढांचे को बढ़ाना भी गौहाटी विश्वविद्यालय के उद्देश्य हैं ।

गौहाटी विश्वविद्यालय अपनी निश्चित राह पर अविराम गति से आगे बढ़ रहा है। 1948 में 18 संबद्ध कॉलेजों और 8 स्नातकोत्तर विभागों से शुरू होने वाले इस संस्थान में वर्तमान स्नातकोत्तर विभागों की संख्या 45 हैं, जिनमें विज्ञान के 10, कला और मानविकी के 24, चिकित्सा और संबद्ध स्वास्थ्य विज्ञान के 1, तकनीकी के 7, वाणिज्य और प्रबंधन के 2, विधि का 1 एक विभाग है।

इनके अतिरिक्त गौहाटी विश्वविद्यालय में 1 घटक कॉलेज, 1 ओपन और ऑनलाइन शिक्षा केंद्र, 1 विश्वविद्यालय अनुदान आयोग का मानव संसाधन विकास केंद्र (यूजीसी एचआरडीसी), 5 केंद्र और संस्थान हैं। इसमें कला, विज्ञान, वाणिज्य, कानून और इंजीनियरिंग के संकायों में स्नातक और स्नातकोत्तर पाठ्यक्रमों के पठन-पाठन के 341 संबद्ध कॉलेज हैं। गौहाटी विश्वविद्यालय भारतीय विश्वविद्यालयों के संघ और राष्ट्रमंडल विश्वविद्यालयों के संघ का सदस्य हैं।

इस विश्वविद्यालय के छात्र न केवल राज्य, बल्कि राष्ट्रीय स्तर पर भी अपनी पहचान बनाने में सफल रहे हैं। इनमें भारत रत्न डॉ. भूपेन हजारिका, प्रसिद्ध साहित्यकार और ज्ञानपीठ पुरस्कार विजेता मामोणि रायसोम गोस्वामी, प्रख्यात कवि डॉ. निर्मल प्रभा बरदलै, प्रसिद्ध शिक्षाविद डॉ. महेश्वर नेउग, प्रमुख साहित्यकार डॉ. वाणीकांत काकति, शिक्षाविद्, लोकगीतों के शोधकर्ता, गायक और संगीतकार डॉ. बीरेंद्र नाथ दत्त प्रमुख हैं।

अन्य प्रसिद्ध पूर्व छात्रों में भौतिकी विभाग के पूर्व छात्र चंद्रयान मिशन के मुख्य वैज्ञानिक, भटनागर पुरस्कार से सम्मानित पद्मश्री डॉ. जितेंद्र नाथ गोस्वामी, पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त श्री हरिशंकर ब्रह्म, असम के पूर्व मुख्यमंत्री श्री प्रफुल्ल कुमार महंत, वर्तमान माननीय मुख्यमंत्री डॉ. हिमंत विश्व शर्मा जैसी प्रसिद्ध हस्तियाँ शामिल हैं। ऐसे तमाम और नाम हैं, जिनका उल्लेख यहाँ संभव नहीं है। विद्यार्थियों की ऐसी सफलता विश्वविद्यालय की गरिमा में चार चाँद लगा देती है।

मुझे अत्यंत हर्ष हो रहा है कि विश्वविद्यालय को सुनियोजित एवं व्यवस्थित रूप से चलाने का काम मेरे साथ और सामने बैठे विश्वविद्यालय के कुलपति, शैक्षणिक और प्रशासनिक विभागों तथा केंद्रों के सभी प्रमुख और अन्य सभी संकाय के सदस्य, अधिकारी एवं कर्मचारी कर रहे हैं। मुझे यह बात अभिभूत करती है कि गौहाटी विश्वविद्यालय में नामांकित कुल विद्यार्थियों में छात्र और छात्राओं का अनुपात 35 : 65 है। यह इस संस्थान की एक अत्यंत महत्वपूर्ण उपलब्धि है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के अनुसार चार वर्षीय स्नातक कार्यक्रम (एफवाईयूजीपी) को गौहाटी विश्वविद्यालय में अगस्त, 2023 से लागू किया जाएगा। राष्ट्रीय शिक्षा नीति, 2020 के कार्यान्वयन की दिशा में गौहाटी विश्वविद्यालय पूर्वोत्तर भारत में ही नहीं, पूरे देश में अग्रणी भूमिका अदा कर रहा है।

राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद (एनएएसी) के तीसरे सत्र (2018-2023) में गौहाटी विश्वविद्यालय को 3.04 सीजीपीए के साथ ए ग्रेड मिला है। सन् 2022 में विश्वविद्यालय को विश्वविद्यालयों के बीच राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क (एनआईआरएफ) का रैंक 36 है, जबकि सभी संस्थानों के बीच यह रैंक 64 है।

राष्ट्रीय संस्थागत रैंकिंग फ्रेमवर्क 2021 रैंकिंग में इस विश्वविद्यालय को पूर्वोत्तर भारत के सभी विश्वविद्यालयों के ऊपर शीर्ष स्थान पर रखा गया है। वर्ष 2019-20 के लिए प्रतिष्ठित राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) पुरस्कार के लिए गौहाटी विश्वविद्यालय को चुना गया है, जिसे विश्वविद्यालय के माननीय कुलपति और एनएसएस सेल, गौहाटी विश्वविद्यालय के कार्यक्रम समन्वयक द्वारा 24 सितंबर, 2021 को भारत के माननीय राष्ट्रपति द्वारा राष्ट्रपति भवन में दिया गया है। गौहाटी विश्वविद्यालय पूरे देश में इस पुरस्कार के लिए चुने गए दो विश्वविद्यालयों में से एक है।

गौहाटी विश्वविद्यालय ने अपनी स्थापना से अब तक गौरवमय 75 वर्ष पूरे किए हैं। यह संस्थान 'जिलिका लुइतरे पार' अर्थात लौहित्य के तट चमकाने के महत उद्देश्य से शिक्षण और शोध के क्षेत्र में निरंतर कार्यरत है। यह अपनी यात्रा में संपूर्ण असमिया समाज के विकास के लिए 'थिंक टैंक' के रूप में कार्य करता रहा है। इसका एक गौरवशाली इतिहास है। पर इतिहास के बलबूते पर कोई अधिक समय तक जीवंत नहीं रह सकता। जीवंतता के लिए सक्रियता अनिवार्य होती है और सक्रियता के लिए कर्मठता ।

यह विश्वविद्यालय अपने स्थापना काल से ही शिक्षा और समाज के क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका निभाता आया है। यही इसकी सफलता का मूल मंत्र है। हम सबके समूहिक प्रयास से यह विश्वविद्यालय आने वाले दिनों में भी दिन-दुगनी, रात चौगुनी विकास के पथ पर अग्रसर होगा, यह मेरी आशा नहीं, विश्वास है।

जय हिन्द